अष्टमः पाठः भारतीय संस्कृतिः

अभ्यास

(अ) तथ्यागत

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) ''विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर ..... अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः।

[**स्रष्टा** = रचयिता, **विभिन्नमतावलम्बिनः** = विभिन्न मतों के अनुयायी, **समभावः** = समान भाव।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'भारतीय संस्कृतिः' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद–''विश्व का रचयिता ईश्वर एक ही है'', यह भारतीय संस्कृति का मूल है। विभिन्न मतों के अनुयायी अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं। अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्ध, ख्रिस्त, अल्लाह आदि नाम एक ही परमात्मा के हैं। उसी ईश्वर को लोग 'गुरु' भी मानते हैं। अतः सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान हमारी संस्कृति का संदेश है।

(ख) भारतीय संस्कृतिः तु ..... राष्ट्रस्य उन्नतिः कर्तव्या।

[**सङ्गमस्थली** = मिलने का स्थान, **काले - काले** = समय समय पर, **समहिताः** = सम्मिलित हुए, **समासिकी** = सामूहिक, समुच्चयात्मक, **समुपासकाः** = उपासक, **सौहार्देन** = प्रेम से]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– भारतीय संस्कृति तो सभी मतों के अनुयायियों के मिलने का स्थान है। समय-समय पर अनेक प्रकार के विचार भारतीय संस्कृति में मिल गए। यह संस्कृति समुच्चयात्मकं (सामूहिक) संस्कृति है, जिसके विकास में अनेक जातियों, सम्प्रदायों और विश्वासों का योगदान दिखाई पड़ता है। इसलिए हम भारतवासियों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है। हम सभी एक संस्कृति की उपासना करने वाले और एक राष्ट्र के नागरिक हैं। जिस प्रकार भाई-भाई परस्पर मिलकर सहयोग और प्रेम से परिवार की उन्नति करते हैं, उसी प्रकार हमें भी सहयोग और प्रेम से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए।

(ग) एषा कर्मवीराणां ..... दुःखभाग् भवेत्।।

[**कर्मवीराणां** = कर्म में संलग्न रहने वालों की, **कुर्वन्नेवेह** = यहाँ करते हुए ही, **जिजीविषेच्छतं समाः** = सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए, **उद्घोषः** = घोषणा, **संलग्ना** = लगे हुए हैं, **कर्मकरणम्** = कर्म करना, **वर्जनीयम्** = छोड़ने योग्य, **विपरीतम्** = विरुद्ध, **आचरामः** = आचरण करते हैं, **लक्षिता भवेत्** = दिखाई दे, **अभिलषामः** = चाहते हैं, **अभ्युदयाय** = उन्नति के लिए, **प्रसरेत्** = प्रसारित हो, **निरामयाः** = रोगरहित, **भद्राणि** = कल्याण, **दुःखभाग्** = दुःख का भागी।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– यह कर्म में संलग्न रहने वालों की भूमि है। ''यहाँ कर्म करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए।'' यह इसकी घोषणा है। पहले कर्म, बाद में फल–यह हमारी संस्कृति का नियम है। इस समय जब हम राष्ट्र के नव–निर्माण में लगे हुए हैं, निरंतर काम करना ही हमारा प्रधान कर्तव्य है। अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है, दूसरे के श्रम का शोषण छोड़ने योग्य है। यदि हम सब विपरीत आचरण करते हैं तो हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं हैं। हम तभी वास्तविक रूप में भारतीय हैं, जब हमारे आचार–विचार में हमारी संस्कृति दिखाई दे। हम सब चाहते हैं कि संसार की उन्नति के लिए भारतीय संस्कृति का यह दिव्य संदेश संसार में सब जगह फैले–''सब सुखी हों। सब रोगरहित हों। सब कल्याण को देखें, अर्थात् सभी का कल्याण हो। कोई भी दु:खी न हो, अर्थात् कोई भी दु:ख का भागी न बने।''

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) भारतीय: संस्कृते: मूलं किम् अस्ति?

उ०– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक एव इति भारतीय–संस्कृते: मूलम् अस्ति।

(ख) भारतीया: संस्कृति: कां सङ्गमस्थली?

उ०– भारतीया: संस्कृति सर्वेषां मतावालम्बिनां सङ्गमस्थली।

(ग) अस्माकं संस्कृति: कीदृशी वर्तते?

उ०– अस्माकं संस्कृति: सदा गतिशीला वर्तते।

(घ) अस्माकं संस्कृते: क: नियम:?

उ०– अस्माकं संस्कृते नियम: 'पूर्व कर्म, तदनन्तरं' फलम् इति अस्ति।

(ङ) ''मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्'' कस्या: अस्ति एष: दिव्य: सन्देश:?

उ०– ''मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्''एष: भारतीय संस्कृति: दिव्य: सन्देश: अस्ति।

(च) संस्कृते: अर्थ: क:?

उ०– मानवजीवनस्य संस्करणम् संस्कृति: इति संस्कृति: शब्दस्य तात्पर्यम्।

(छ) विश्वस्य स्त्रष्टा क:?

उ०– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक एव अस्ति।

(ज) अस्माकं भारतीय संस्कृते: क: सन्देश:?

उ०– सर्वेषां मतानां समभाव: सम्मानश्च अस्माकं संस्कृते: दिव्य: सन्देश: अस्ति।

(झ) ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' एष: दिव्य: सन्देश: कस्या: अस्ति?

उ०– ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' अस्माकं संस्कृते सन्देश: अस्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. भारतीय संस्कृति विश्वभर में प्रसिद्ध है।

अनुवाद– भारतीय संस्कृति सर्वें विश्वे सुविख्यात अस्ति।

2. अपनी संस्कृति की रक्षा करना हमारा धर्म है।

अनुवाद– स्वसंस्कृते: रक्षणम् अस्माकं धर्म: अस्ति।

3. भारतीय संस्कृति विविध धर्मों का संगम है।

अनुवाद–भारतीया संस्कृति: विविधानां धर्मणां सङ्गमस्थली।

4. हमें भारतीय संस्कृति को सदैव बनाए रखना चाहिए।

अनुवाद– वयं भारतीया संस्कृतं सदा संरक्षयेत्।

5. विश्व का रचयिता ईश्वर एक है।

अनुवाद– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक: अस्ति।

6. सभी सुखी हों, हमारी ऐसी कामना है।

अनुवाद– सर्वें सुखिन: भवन्तु, अस्माकं एव अभिलाषा अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द		**संधि-विच्छेद**
मतावलम्बिनां	–	मत + अवलम्बिनां
समुपासका:	–	सम + उपासका:
कुर्वन्नेवेह	–	कुर्वन्न + एव + इह
जिजीविषेच्छतं	–	जिजीविषेत् + शतं
यदास्याकम्	–	यद + अस्याकम्

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

मानव:	–	पुरुष:, नर:।
ईश्वर:	–	प्रभु:, ईश:।
श्रम:	–	परिश्रम:, उद्यम:।
लोक:	–	संसार:, विश्व:।
अग्नि:	–	पावक:, आग:।

3. निम्नलिखित में धातु, लकार, पुरुष व वचन बताइए–

शब्द	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
भवति	भू	लट् लकार	प्रथम	एकवचन
दृश्यते	दृश	लट् लकार	प्रथम	एकवचन
भजन्ते	भज	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन
मन्यन्ते	मन	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन
अकुर्वन	कृ	लङ् लकार	प्रथम	बहुवचन

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।